DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
सन्धि (व्यंजन सन्धि)
Part -3
LIVE 02-04-2024 05:00 PM

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

पूर्वसवर्णविधायकं विधिसूत्रम्

उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ८।४।६१॥

उदः परयोः स्थास्तम्भोः पूर्वसवर्णः।

उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य । स्था च स्तम्भ् च तयोरितरेतरद्वन्द्वः स्थास्तम्भौ, तयोः स्थास्तम्भोः । इस सूत्र में अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः से सवर्णः की अनुवृत्ति आती है।

उत् उपसर्ग से परे स्था और स्तम्भ को पूर्वसवर्ण होता है।

महाप्राण विवार श्वास अघोष
'' '' '' ''
उत्थानम्

स् (1,2) थ्

खर् : विवार श्वास अघोष

हश् : संवार नाद घोष

उत् + स्थानम्

पूर्वसवर्ण

फलम् : ईषत् विवृत्

महाप्राण

(2,4) → शल्

135

अल्पप्राणः

फलम्

त् थ् द् ध् न्

1 3 5

स्थानेऽन्तरतमः

→ स्पृष्ट

थ ध्

२

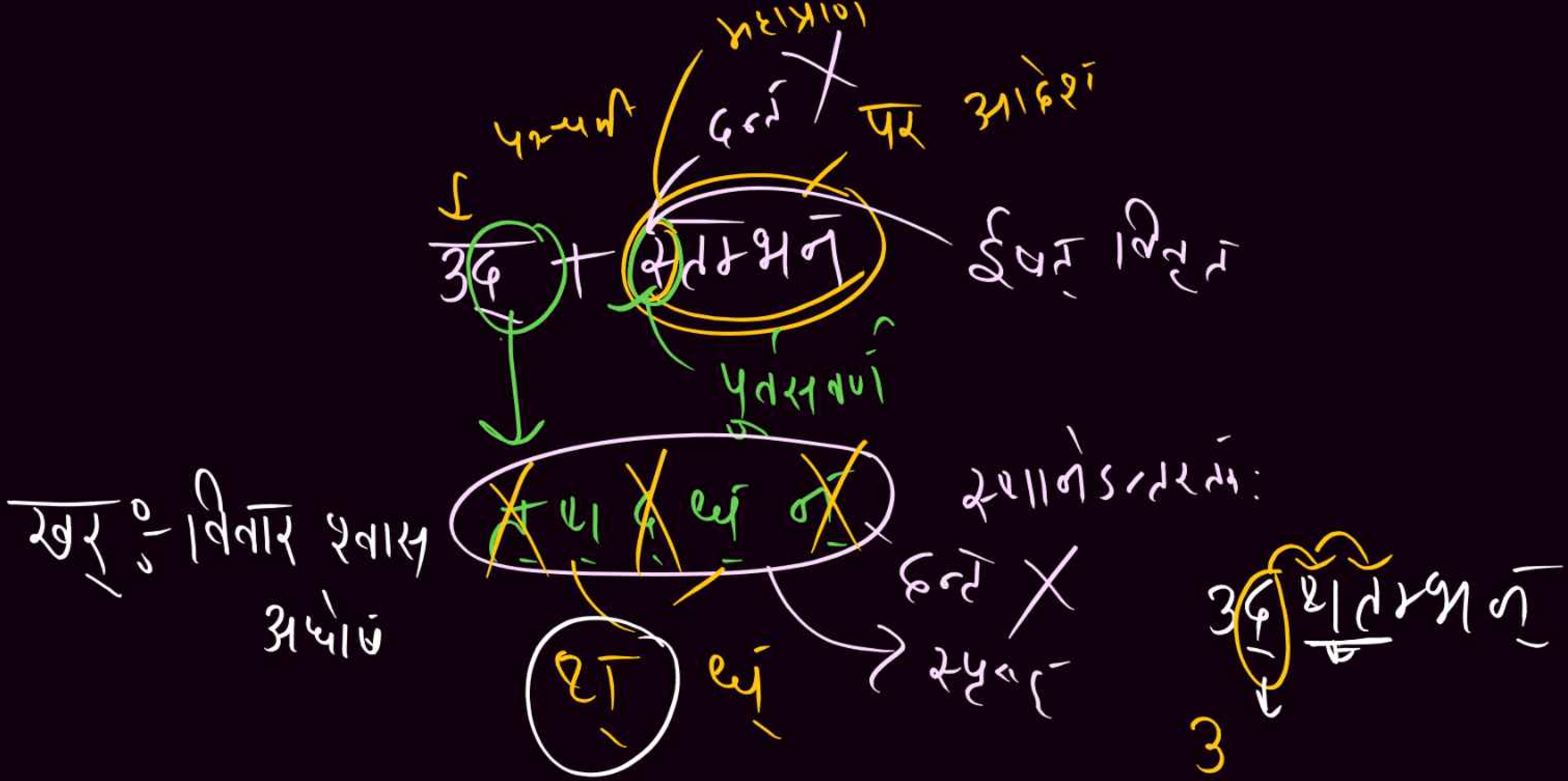

महाप्राण
पञ्चमी
वर्ण
पर आदेश
उद् + स्तम्भनं
ईषत् विवृत
पूर्वसवर्ण
खर् :- विवार श्वास
अघोष
स्थानेऽन्तरतमः
थ्
ध्
वर्ण
स्पृष्ट
उद् थ्तम्भनं
उत्तम्भनं
3

उद्स्थानम्

उद् + स्थानम् = उत्थानम्

त् (चर्त्व)

नियमकारकं परिभाषासूत्रम्

तस्मादित्युत्तरस्य १११ १६७ ॥

पञ्चमीनिर्देशेन क्रियमाणं कार्यं वर्णान्तरेणाव्यवहितस्य परस्य ज्ञेयम् ।

तस्मात् + इति + उत्तरस्य

तस्मादित्युत्तरस्य । तस्माद् इति पञ्चम्यन्तानुकरणम् (इति अव्ययपदं), उत्तरस्य षष्ठ्यन्तं, त्रिपदमिदं सूत्रम् ।

पञ्चम्यन्त पद के निर्देश से किया जाने वाला कार्य अन्य वर्णों के व्यवधान से रहित पर के स्थान पर जानना चाहिए।

यह सूत्र तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य का प्रतिरूपक है । वह पर से अव्यवहित पूर्व के स्थान पर होने का विधान करता है तो यह पूर्व से अव्यवहित पर के स्थान पर होने का विधान करता है । उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य आदि सूत्रों में उदः ऐसा पञ्चम्यन्त पद, उससे निर्दिष्ट कार्य किसी वर्ण के व्यवधान के विना उत् आदि से पर में विद्यमान के स्थान पर होना चाहिए।

नियमकारकं परिभाषासूत्रम्

आदेः परस्य १।१।५४ ॥

परस्य यद्विहितं तत्तस्यादेर्बोध्यम् । इति सस्य थः ।

संयोगान्तस्य लोपः में अलोऽन्त्यस्य से अन्त्यस्य जाकर सूत्रार्थ बनाया- संयोगान्त पद के अन्त्य वर्ण का लोप हो। इसी तरह उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य में तस्मादित्युत्तरस्य जाकर अव्यवहित पर यह अर्थ किया। ७२ - आदेः परस्य । आदेः षष्ठ्यन्तं परस्य षष्ठ्यन्तं द्विपदमिदं सूत्रम् । इस सूत्र में अलोऽन्त्यस्य से अलः की अनुवृत्ति आती है। पर के स्थान पर जो कार्य विधान किया जाता है, वह कार्य उसके आदि अल् के स्थान पर होता है ।

षष्ठ्यन्त पद के निर्देश से किया जाने वाला आदेश अन्त्य वर्ण के स्थान पर होता है, ऐसा अलोऽन्त्यस्य सूत्र ने बताया था। इसके क्षेत्र को सीमित करते हुए यह सूत्र कहता है कि किसी से पर में विद्यमान को यदि कोई कार्य हो रहा हो तो उस पर के अन्त्य को कार्य न होकर आदि को हो। जैसे- प्रकृत में उद् से पर में विद्यमान स्था और स्तम्भ को पूर्वसवर्ण आदेश हो रहा है किन्तु वह आदेश षष्ठ्यन्त स्थास्तम्भोः से निर्दिष्ट होने के कारण अन्त्य आ और भू को प्राप्त था। इस सूत्र के होने पर आदि सकार के स्थान पर ही कार्य होता है।

वैकल्पिकलोपविधायकं विधिसूत्रम्

झरो झरि सवर्णे ८२४ ६५ ॥

हलः परस्य झरो वा लोपः सवर्णे झरि ।

1,2,3,4, श् ष् स्

हल् + झर् + सवर्ण झर् - 1,2,3,4 श् ष् स्

व्यञ्जन

विकल्प से लोप

हल् झर् झर् (सवर्ण)

उद्ध्थानम् = उद्थानम् / उद्ध्थानम्

झरो झरि सवर्णे । झरः षष्ठ्यन्तं, झरि सप्तम्यन्तं, सवर्णे सप्तम्यन्तं, त्रिपदमिदं सूत्रम् । हलो यमां यमि लोपः से हलः और लोपः तथा झयो होऽन्यतरस्याम् से अन्यतरस्याम् की अनुवृत्ति आती है। अन्यतरस्याम् का अर्थ विकल्प से है।

हल् से परे झर का विकल्प से लोप होता है सवर्ण झर् के परे होने पर ।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

चरादेशविधायकं विधिसूत्रम्

खरि च ८।४।५५ ॥

खरि झलां चरः स्युः । इत्युदो दस्य तः । उत्थानम्। उत्तम्भनम्।

खरि च। खरि सप्तम्यन्तं च अव्ययपदं, द्विपदमिदं सूत्रम् । झलां जश् झशि से झलां तथा अभ्यासे चर्च से चर् की अनुवृत्ति आती है।

खर् के परे रहने पर झल् के स्थान पर चर् आदेश होता है।

वैकल्पिकपूर्वसवर्णविधायकं विधिसूत्रम्

झयो होऽन्यतरस्याम् ८।४।६२ ॥

झयः परस्य हस्य वा पूर्वसवर्णः ।

नादस्य घोषस्य संवारस्य महाप्राणस्य तादृशो वर्गचतुर्थः ।

वाग्घरिः, वाग्हरिः ।

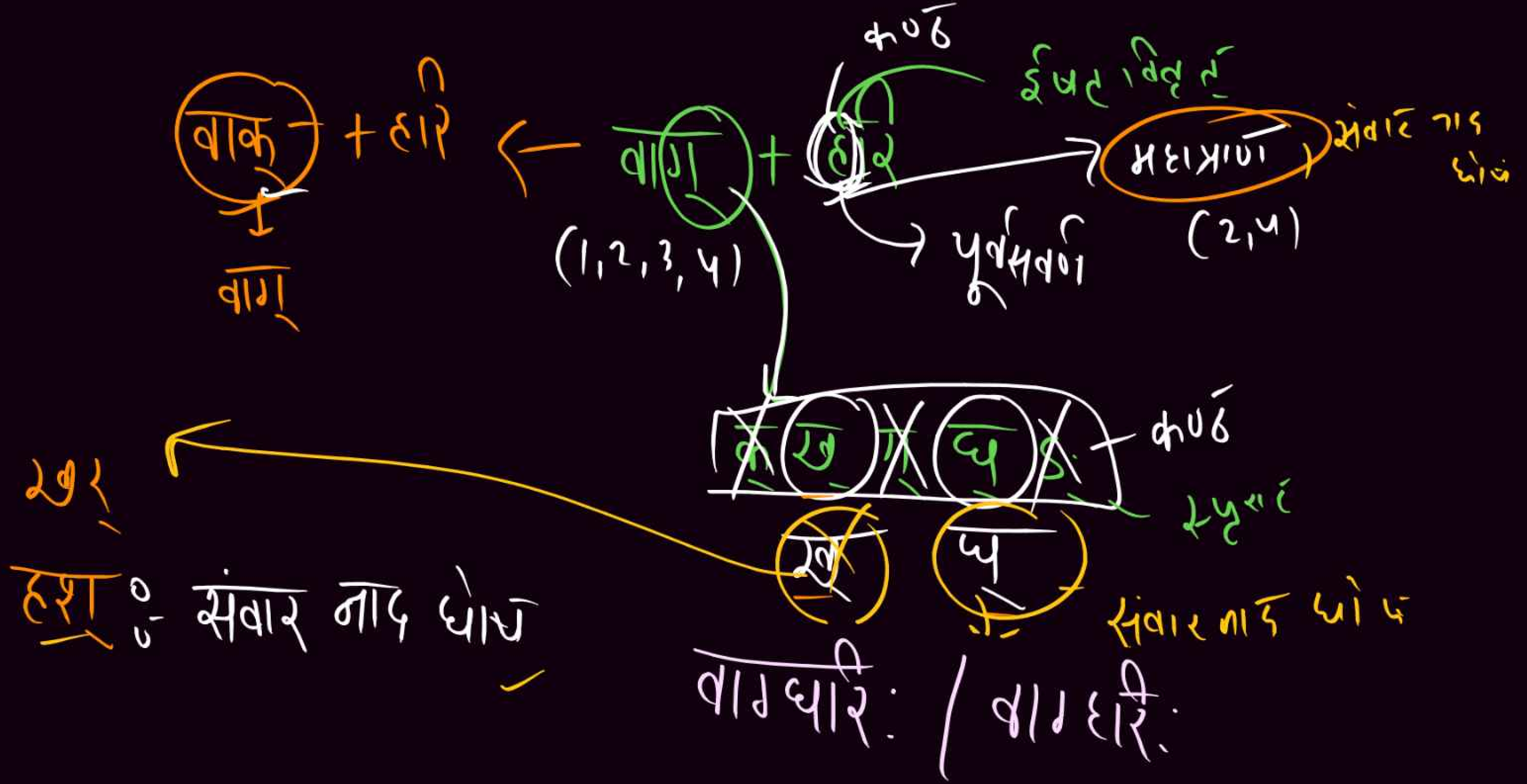

वाक् + हरि
वाग्
वाग् + हरि
(1, 2, 3, 4)
कण्ठ
ईषत् विवृत
महाप्राण
(2, 4)
संवार नाद घोष
पूर्वसवर्ण
क ख ग घ ङ
कण्ठ
स्पर्श
ख घ
संवार नाद घोष
खर्
हश् : संवार नाद घोष
वाग्घरिः / वाग्हरिः

वैकल्पिक छत्व विधायक विधिसूत्र

झय् + श + अट्
छ (विकल्प सूत्र)

शश्छो टि ८|४|६३ ॥

झयः परस्य शस्य छो वाऽटि । तद् + शिव इत्यत्र दस्य श्चुत्वेन जकारे कृते खरि चेति जकारस्य चकारः । तच्छिवः तच्शिवः ।

वार्तिकम् - छत्वममीति वाच्यम्। तच्छलोकेन ।

शश्छोटि । शः षष्ठ्यन्तं छः प्रथमान्तम्, अटि सप्तम्यन्तं त्रिपदमिदं सूत्रम् । झयो होऽन्यतरस्याम् से झयः और अन्यतरस्याम् की अनुवृत्ति आती है।

झय् से परे शकार के स्थान पर छकार आदेश विकल्प से होता है, अट् के परे होने पर।

तत् + शिवः

तच्शिवः

च् → छ्

शं + तः (अ...

च्छ (1, 2, 3, 4)

विकल्प से होगा

तच्छिवः / तच्शिवः

तद् + शीतः

तज् शीतः (स्तोः श्चुना श्चुः)

(खरि च)

तच्शीः

तत् + श्लोकेन

तच्श्लोकेन

(झयः शः अम्

1, 2, 3, 4)

तच्छ्लोकेन, तच्श्लोके